The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 3 | March 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

मध्यप्रदेश के प्राचीन वैदिक शिक्षा केन्द्र

डॉ0 फ़ातमा खान

विक्रम विश्वविधालय, उज्जैन, म.प्र.

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-03-2025

Published: 15-04-2025

Keywords:

अवन्ति प्रदेश,शिक्षा केन्द्र, आश्रम, गुरुकुल, वैदिक, आचार्य, साहित्य, शैवाचार्य, महर्षि, विधार्थी

ABSTRACT

मध्यप्रदेश प्राचीन काल से ही शिक्षा का केन्द्र रहा है। इसके प्राचीन नगर शिक्षा व साहित्य के लिए प्रसिद्ध थे।जहाँ देश भर से विधार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। उत्तर वैदिक काल से लेकर 12 वीं शताब्दी ई.वी. तक यहाँ वैदिक शिक्षा केन्द्रो का अधिक प्रभाव रहा। वैदिक शिक्षा प्रणाली की मुख्य विशेषता गुरुकुल शिक्षा रही है। मध्यप्रदेश के प्राचीन वैदिक शिक्षा केन्द्र उच्चकोटी के केन्द्र रहे जहां समृद्ध आचार्य परम्परा रही,यहाँ भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों से विधार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15223260

प्रस्तावना :

मध्यप्रदेश में वैदिक शिक्षा का विकास उत्तर वैदिक काल से दिखाई देता है। प्राचीन काल में वर्तमान मध्यप्रदेश अवन्ति प्रदेश के नाम से जाना जाता था जिसके प्राचीन नगर शिक्षा के केंद्र थे। यहाँ भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों से विधार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे। अवन्ति प्रदेश की राजधानी उज्जयिनी शिक्षा व साहित्य के लिए प्रमुख प्रसिद्ध थी। अवन्ति प्रदेश के प्राकृतिक सौन्दर्य से आकर्षित होकर ऋषियों व मुनियों ने अपने आश्रम व गुरुकुल यहाँ स्थापित किये जहां भारतवर्ष के

विभिन्न क्षेत्रों से विधार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे। राजवंशो तथा जनसाधारण का सहयोग भी शिक्षा केन्द्रो को प्राप्त था जिससे उनके संचालन में सहयोग मिलता था।इन वैदिक शिक्षा केन्द्रो पर छात्रो को परा व अपरा दोनों ही प्रकार की शिक्षा दी जाती थी जिससे आध्यात्मिक विकास के साथ भौतिक विकास भी हो सके। उज्जयिनी,महिष्मती,पद्मावती,त्रिपुरी,धारा,कद्वाहा आदि स्थानो पर वैदिक शिक्षा केंद्र रहे है जिनके पुरातात्विक व साहित्यिक प्रमाण भी उपलब्ध है। इस शोध पत्र में मध्यप्रदेश के प्रमुख वैदिक शिक्षा केन्द्रो का उल्लेख किया जाएगा।

सान्दीपनि आश्रम: क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित महर्षि सान्दीपनि का आश्रम उच्च शिक्षा केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था और आज भी विधमान है। जिस समय भारतवर्ष में गुरुकुल शिक्षा या आश्रम शिक्षा का प्रचलन था तब महर्षि संदीपनि ने उज्जयिनी जो अवनति प्रदेश की राजधानी थी में आकर अपने आश्रम की स्थापना की। इस आश्रम की ख्याति व्यापक थी जहां देश के विभिन्न भागो से विधार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे । आश्रम में परा-अपरा विधा तथा ज्ञान विज्ञान किया शिक्षा दी जाती थी। पुराणों मे महर्षि संदीपनि को योगियो तथा ज्ञानियों का गुरु कहा गया है। पुराणों के अनुसार सांदीपनि आश्रम श्रीकृष्ण तथा बलराम की शिक्षा स्थली भी है,जहां उन्होने गुरु सांदीपनि से शिक्षा प्राप्त की थी। भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण ने 14 विधाएँ और 64 कलाओ का ज्ञान प्राप्त किया।

सांदीपनि आश्रम वैदिक शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था जहां वेद,वेदांग,धर्मशास्त्र,राजनीति शास्त्र,न्यायशास्त्र,धनुर्वेद,अस्त्र-शस्त्र आदि की शिक्षा विध्यार्थियों को दी जाती थी । आश्रम मे 64 कलाओ तथा वैदिक साहित्य के साथ-साथ विधार्थीयो को व्यावहारिक शिक्षा का भी ज्ञान दिया जाता था जिससे उन्हे जीविका चलाने मेँ सहायता मिल सके । इस प्रकार सांदीपनि आश्रम वैदिक शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र था।

उज्जयिनी: भारत के प्राचीन शिक्षा केन्द्रो में उज्जयिनी प्रमुख थी। वैदिक शिक्षा का केन्द्र होने के साथ ही बौद्ध और जैन धर्म की शिक्षा का केन्द्र भी रही। उज्जयिनी का शिक्षा और साहित्य की दृष्टि से

महत्वपूर्ण स्थान है। भारतवर्ष की सात पुरियों में उज्जयिनी म.प्र. का ह्रदय स्थल है। शिप्रा नदी के तट पर बसा उज्जयिनी प्राचीन काल से ही विधा के केन्द्र के रूप में विख्यात थी। भारत के विभिन्न भागो से विधाध्यायन के लिए विधार्थी यहाँ आते थे। वैदिक परम्परा की यहाँ एक लंबी श्रंखला रही है। ऋषियों,मुनियो,आचार्यो,साहित्यकारो,व्याकरणाचार्यों को उज्जयिनी आकर्षित करती रही। चतुर्भर्णी के पादताड़ितकम के अनुसार यहाँ ब्राह्मण निवास करते थे इन पीठिकाओ में वेदो का अभ्यास निरंतर चलता रहता था। उज्जयिनी वैदिक गणित,ज्योतिष,तथा खगोलशास्त्र विधा का केन्द्र रही है।उज्जयिनी संस्कृत भाषा की संरक्षिका भी रही यहाँ की प्राचीन भाषा संस्कृत रही है। कालिदास,वराहमिहिर,अमरसिंह जैसे विद्वान उज्जयिनी से ही थे। उज्जयिनी ऐतिहासिक,पौराणिक तथा सांस्कृतिक नगरी है। राजा विक्रमादित्य तथा राजा भोज जैसे संस्कृत प्रेमी तथा शिक्षा व साहित्य अनुरागी शासको का इसे संरक्षण प्राप्त हुआ। राजा भोज ने यहाँ एक सरस्वती सदन (विधालय)का निर्माण भी करवाया था जो वैदिक शिक्षा का केन्द्र था।उज्जयिनी सदा ही विद्वानो,आचार्यो का केन्द्र रहा तथा उन्हे आकर्षित करता रहा। इस प्रकार वैदिक शिक्षा केन्द्र के रूप में उज्जयिनी साहित्य तथा संस्कृति की संरक्षिका रही है

धारा नगरी (धार): प्राचीन काल की धारा नगरी वर्तमान में धार नाम से जानी जाती है। धारा मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र की प्रसिद्ध नगरी है। धारा परमार शासको की कुल राजधानी थी। धारा विधा केन्द्र के रूप में भारतवर्ष में विख्यात थी। परमार शासको का शिक्षा व साहित्य के क्षेत्र मत्वपूर्ण योगदान रहा है। परमार शासक विद्या प्रेमी व शिक्षा अनुरागी थे तथा विद्वानो को आश्रय देते थे। इस कारण धारा विद्वानो तथा महान पंडितो की काशी स्वरूप थी। परमार शासको के शासन काल में मालवा साहित्य तथा शिक्षा के क्षेत्र में चर्मोत्कर्ष पर था। परमार शासक वाक्पति मुंज तथा राजा भोज स्वयं भी विद्वान तथा लेखक थे। वैदिक साहित्य का संरक्षक राजा भोज न केवल विद्वानो,पंडितो कवियों को आश्रय देता अपितु अपने दरबार में सम्मानित भी करता था। संस्कृत साहित्य की धारा नगरी में अत्यंत उन्नति हुई।नगर में शिक्षित वर्ग अधिक था। परमार शासको ने विधालय स्थापित किये जो 'सरस्वती

सदन' कहलाये। राजा भोज ने धार तथा उज्जैन में 'सरस्वती सदन' अथवा 'शारदा-सदन' बनवाए जो विधा के केंद्र थे। आज भी धार में दो पाषाण स्तंभों पर नागबंध के रूप में वर्णमाला तथा धातु प्रत्यमाला उत्कीर्ण है। स्थानीय लोग इस स्थान को भोजशाला के नाम से जानते है। भोजशाला एक प्रसिद्ध विधा केन्द्र था जहां अध्ययन एवं विद्वान सभा का आयोजन भी होता था। प्रभावक-चरित्र में इसे पाठशाला या वाग्देवी कुल सदन कहा गया है। धारा नगरी का यह 'सरस्वती सदन' या 'शारदा-सदन' विश्व की पहली संस्कृत अकादमी-प्रस्तर पुस्तकालय था जो 300 सालो तक वैदिक शिक्षा का केन्द्र रहा तथा धारा शैक्षणिक,सांस्कृतिक,साहित्यिक एवं धार्मिक गतिविधियो का केन्द्र बनी रही।

प्राचीन मठ: मध्यप्रदेश में लगभग 7वीं-8वीं शताब्दी तक हिन्दू मठ स्थापित हो चुके थे। जिनमे शैव तथा वैष्णव सम्प्रदाय के मठ प्रमुख थे। अभिलेखो से प्रमाणित होता है कि प्राचीन मध्यप्रदेश में शैव सिद्धान्त संप्रदाय की मत्तमयूर शाखा के आचार्यो का अत्याधिक प्रभाव रहा है।मालवा एवं मध्यप्रदेश के गुना,शिवपुरी क्षेत्रों से अनेक मठो के प्रमाण प्राप्त होते है। कद्वाहा से प्राप्त एक खंडित शिलालेख में मत्तमयूर वंश के धर्मशिव नामक आचार्य का उल्लेख है। मत्तमयूर शाखा के आचार्यों का प्रभाव तत्तकालीन राजवंशो पर भी था तथा वह उनके अनुयायी थे।त्रिपुरी के कल्चुरी,मालवा के परमार,ग्वालियर के कच्छपात,चंदेरी के प्रतिहार आदि राजवंश इन आचार्यो से दीक्षित होते थे तथा उनको दान के रूप में ग्राम(अग्रहार)देते थे। अग्रहरों से प्राप्त आय द्वारा मठो का संचालन होता था। मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त यह प्राचीन मठ वैदिक शिक्षा का केन्द्र थे। इन मठो में वैदिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षा भी दी जाती थी।जिनमे प्रमुख थे तर्कशास्त्र एवं शस्त्र विधा। कदवाहा, सुरवाया, रनोंण, तेरही नोंहलेश्वर मठ आदि स्थानो पर ऐसे ही मठ थे जो वैदिक शिक्षा का केन्द्र थे। इन मठो का अपना एक विशेष महत्व रहा है।शिक्षा के साथ तत्कालीन राजनीति या राजव्यवस्था पर भी इन मठो का प्रभाव रहता था।प्राचीन काल में वैदिक शिक्षा केन्द्रो के रूप में इन मठो की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1)मुखर्जी,आर. के.,एंशिएंट इंडियन एजुकेशन,पृ. 37

2)अल्तेकर,ए.एस.,प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति,पृ. 160

3)शर्मा,आर.के.,मध्यप्रदेश का प्राचीन इतिहास,पृ.277

4)विक्रम स्मृति ग्रन्थ,पृ.263

5)कानूनगो,शोभा,उज्जयिनी का सांस्कृतिक इतिहास,पृ. 103

6)अहिरवार,रामकुमार,उज्जयिनी की सांस्कृतिक परम्परा,पृ.51

7)सिंह,रामलखन,प्रतिहार राजपूतो का इतिहास,पृ. 58

8)शास्त्री,अजायमिश्र,त्रिपुरी,पृ.89

9)परमारवंश का इतिहास,पृ. 275